Dr. Sunil Kr. "Suman"
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
System PSY.
Date-29-10-20
To-Next-class

Humanistic Psychology

Contribution of Rogers

(1) जीव या प्राणी (organism) :- सामान्यतः मनोविज्ञान में प्राणी से तात्पर्य एक ऐसे जैविक जीव से होता है जो वातावरण के विभिन्न पहलुओं के प्रति अनुक्रिया करता लेकिन रोजर्स ने इस पद को थोड़ा भिन्न अर्थ में लिया है। उनके लिए प्राणी से तात्पर्य उन अनुभूतियों की सम्पूर्णता (totality) से होता है जो किसी विशेष क्षण पुरे व्यक्ति में होते रहते हैं। इस तरह से प्राणी को उन सभी तरह के अनुभूतियों का केन्द्र माना जाता है जो हमारे शरीर के भीतर होनेवाले घटनाओं का प्रत्यक्षण से लेकर वाह्य वातावरण की घटनाओं के प्रत्यक्षण तक परिवर्तित होते रहते हैं।

(2) आत्मन (Self) :- रोजर्स के लिए आत्मन से तात्पर्य अनुभूतियों की संपूर्णता (totality of experiences) से होता है। इस तरह की सम्पूर्णता में चेतन तथा अचेतन दोनों तरह की अनुभूतियाँ सम्मिलित होती है। अनुभूतियों के इस सम्पूर्ण योग को प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र (perceptual field) या प्रातिभासिक क्षेत्र (Phenomenal field) कहा जाता है। प्रातिभासिक क्षेत्र की अनुभूतियाँ भीतर की अनुभूतियाँ होती है जिसके बारे में पुरानुभूतिय अनुमान (emphatic inference) के

अलावा अन्य किसी विधि से ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है हलांकि ऐसी अनुभूतियाँ जीव या प्राणी की आन्तरिक अनुभूति होती है, इसके स्रोत आन्तरिक या बाह्य या दोनों हो सकते हैं।

इसी प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र (Perceptual field) से धीरे धीरे आत्मन (Self) की उत्पत्ति होती है। शैशवावस्था में जब प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र का एक हिस्सा 'मैं' या मुझ के रूप में व्यक्तिकृत (Personalized) या विभेदित (Differentiated) होता है, तो आत्मन (Self) का निर्माण या उत्पत्ति हुआ समझा जाता है। रोजर्स के लिए आत्मन (Self) एक ऐसा तरह पदार्थ के समान है जिसकी आकृति (Gestalt) परिवर्तनीय होता है और यह चेतना में या चेतना से परे भी हो सकता है। आत्मन के विकास से शिशु अच्छे या बुरे का ज्ञान हो जाता है तथा वह अपनी अनुभूतियों को धनात्मक या ऋणात्मक रूप से मूल्यांकण भी करना प्रारंभ कर देता है। रोजर्स के लिए आत्मन व्यक्तित्व का एक अलग बीमा (Separate dimension) नहीं है जैसा की फ्रायड के लिए अहं (Ego) तथा युंग के लिए आत्मन (Self) है। रोजर्स का मत है कि किसी व्यक्ति के आत्मन (Self) नहीं होता है बल्कि आत्मन में ही संपूर्ण प्राणी या जीव सम्मिलित होता है। उन्होंने आत्मन (Self) के दो उपसंप्रत्यय (Subsystem) बतलाये हैं।

(i) आत्म-संप्रत्यय संप्रत्यय (Self concept)

(ii) आदर्शवादी आत्मन (Ideal Self)

Next class